यों विधिपूर्वक स्वामिन् तेरा करते हैं जो अभिनंदन।

बंधु श्री- सच सखी जिनेंद्र भगवान के दर्शन करते ही मन प्रफुल्लित हो उठता है ।भक्ति रस का आनंद लेते ही संसार रस की रुचि छूट जाती है।
सखी- तो बंधु श्री मैं सेठ जी को कह देती हूं कि तुम्हारे लिए अब वर न ढूंढे क्योंकि हमारी बंधु तो बैरागी हो गई है।
(बंधु श्री शर्मा जाती है सारी सखियां उसका मज़ाक उड़ाती हैं)

(राजा मंत्री नगर भ्रमण कर रहे हैं और तभी वे बंधु श्री को देखते हैं)
(राजा मन में विचार करता है)
यह रूप लावण्य अब तक मेरी नजरों से ओझल था।पर आज इसे देख मन विचलित हो रहा है हृदय में प्रेम की तरंगे उठ रही हैं अरे यह क्या मैं शिथिल हो ,,,,,,,,, अपने पर काबू तक नहीं पा रहा हूँ ।
(यह विचार करते-करते राजमहल की ओर प्रस्थान करते हैं तथा शयन कक्ष में आकुल व्याकुल होने लगते हैं)
(शयनकक्ष का दृश्य। राजा मन में विचार कर रहा है)

वह सुंदरी मेरी आंखों से ओझल ही नहीं हो रही है मैं व्याकुल हो रहा हूं उसे पाने। अब मेरा हृदय मेरा नहीं रहा। अरे अरे अब मेरा वश मुझ पर नहीं रहा।

(तभी मंत्री का प्रवेश होता है)
मंत्री- प्रणाम महाराज
राजा- अरे मंत्री जी आइए आइए। (हताश और व्याकुल) मंत्री- महाराज आपका स्वर तो शिथिलता का उद्योत कर व्याकुलता दर्शा रहा है।
राजा- हां मंत्री में व्याकुल हो उठा हूं मैं व्याकुल हो उठा हूं।
मंत्री- नगराधिराज के मन को व्याकुल करने वाली भी वस्तु भला इस जगत में है?महाराज आदेश कीजिए उसको आपके चरणो में जल्द से जल्द भेंट करूंगा।
राजा- सच मंत्री आप सच कह रहे हैं?तो ला दीजिए उस सुंदरी को मेरे पास जो मुझे मार्ग में व्याकुल कर गई। मेरी अधीरता का कारण बन गई। मैं उससे शीघ्र विवाह करना चाहता हूं।मेरा जीवन उसके बिना निष्फल है।
मंत्री- मार्ग में तो हम गुणपाल सेठ की पुत्री बंधु श्री से टकराए थे।
सेठ जी का परिवार बहुत ही धार्मिक है और उन्हीं के धार्मिक संस्कारों के प्रभाव से बंधु श्री भी अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति की है।
परंतु राजन् वे तो जिन धर्म के अनुयाई हैं और आप तो जैन धर्म के विरोधी हैं ।अत: यह मिलन कैसे हो सकेगा? बन्धु श्री यह प्रस्ताव कभी स्वीकार नहीं करेगी।
राजा- आप कैसी बातें कर रही है मंत्रीवर अरे राजवैभव का लोभ उसे सब कुछ भुला देगा।पूरे राज्य एवं हमारे हृदय पर राज करेगी बंधु श्री! ।मेरा एक पल भी उसके बिना रहना असंभव है। हे मंत्री!सेठ गुणपाल के घर जाइये और उन्हें यह संदेश दीजिये कि राजा आपकी कन्या बंधु श्री के साथ विवाह करना चाहता है और शीघ्र शुभ मुहूर्त में विवाह की तैयारी करने की आज्ञा दी है अतः आज्ञा का पालन किया जाए।
मंत्री- सेठ जी के पास भी तो अरबों की संपदा है उनके पास क्या कमी है?
राजा - परंतु राजघराने के सामने तो तुच्छ है ना आप अभी जाइये और सेठ जी के सामने यह प्रस्ताव रखिये।
मंत्री- जो आज्ञा महाराज। आप तनिक भी चिंता ना करें राजन मैं इस कार्य में निपुण हूं। आपकी आज्ञा मेरे लिए सर्वोपरि। बंधु श्री शीघ्र ही आप के साथ विवाह के बंधन में बंधेगी।

चतुर्थ दृश्य

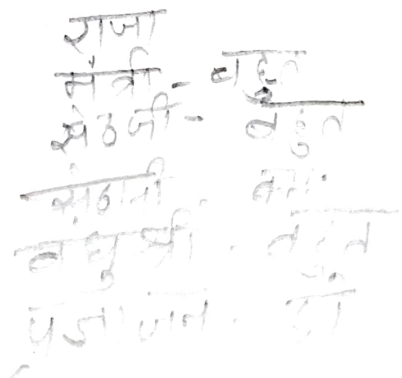

(सेठ जी का घर)

मंत्री - बधाई हो सेठ जी बधाई हो।
सेठ जी- अरे अरे मंत्री व आप यहां। पधारिए पधारिए मंत्री जी विराजिए।
मंत्री- सेठ जी आपने ध्यान नहीं दिया मैं आपको बधाई दे रहा हूं और आपके चेहरे पर तो खुशी की झलक तक नहीं दिख रही है।
सेठ जी- मंत्री जी मैंने ध्यान नहीं दिया।वैसे किस बात की बधाई दे रहे हैं आप हमें?
मंत्री- आपके घर गूंजने वाली शहनाईयों की बधाई दे रहा हूं मैं आपको। आपकी पुत्री सौभाग्यशाली है जो उसके दरवाजे पर ऐसा महान सौभाग्य स्वयं चलकर आया है। सेठ जी- पहेलियां मत बुझाया मंत्री जी साफ-साफ बताइए।
मंत्री - महाराज ने आपकी कन्या बंधु श्री के लिए विवाह का प्रस्ताव भेजा है।
सेठ जी- परंतु राजा तो जैन धर्म का विरोधी है और मेरी कन्या तो जैन धर्म की दृढ़ श्रद्धानी है वह विधर्मी राजा के साथ जीवन निर्वाह कैसे करेगी?
दासी- लक्ष्मी यदि दरवाजा खटखटाया तो मुंह नहीं फेरना चाहिए। सेठ जी आप तो तैयारियां शुरू कीजिए।
सेठ जी - धर्म तो जीव का सच्चा साथी है नहीं नहीं यह विवाह नहीं हो सकता।
मंत्री- आप इसे सहर्ष स्वीकार करिए सेठ जी।वरना फिर आपको राजघरानों की ताकत का भी रस चखाना पड़ेगा।
सेठ जी- जो बात बात पर तलवार निकाल कर बात करते हैं वे वीर नहीं कायर होते हैं मंत्रीवर। और ऐसे कायरों और विधर्मियों से मैं अपनी पुत्री का विवाह हरगिज़ नहीं कर सकता।
मंत्री- विचार कीजिएगा सेठ जी। कहीं ऐसा ना हो पुत्री के लोभ में आपको कारावास का सुख भोगना पड़े।
(मंत्री धमकी देकर चला जाता है)

(गीत प्रारंभ होता है)
महा भाग्य से जिन शासन अरु जिन दर्शन पाया हमने
जिनवाणी की बात सुनी अरु निज वैभव पाया हमने
कैसे ब्याह करूं पुत्री का अरे विधर्मी राजा से
कैसे उसके भव बिगाड़ दूं मृत्यु तो अच्छी उससे
हाय हाय यह महाविपत्ती जीवन पर कैसे आई
राजपाट पाकर भी बेटी का जीवन हो दुखदाई
पत्नी पुत्री से भी पूछू फिर निर्णय लूं हितकारी
धन्य धन्य वे महासती हैं जय जय शत श्रद्धान की।

सेठ जी- धनश्री ओ धनश्री सुनती हो?
सेठानी- हां जी आई क्या बात है स्वामी आज बड़े प्रसन्न दिखाई दे रहे हो?
सेठ जी - बात ही ऐसी है आज मेरी पुत्री के महा पुण्य का उदय आया है।
सेठानी- अच्छा ऐसी क्या बात है हमें दिगंबर जैन धर्म मिला है इससे भी अधिक पुण्य का उदय कौन सा है?
सेठ जी- तुम सुनोगी तो बड़ी प्रसन्नता से नाच उठोगी।
सेठानी- स्वामी इंतजार मत कराइये बताइए ना।
सेठ जी- राजा विश्वंभर का संदेशा आया है, वह हमारी बेटी से विवाह करना चाहते हैं। हमारी बेटी देश की पटरानी बनेगी यह हमारे लिए कितने गौरव की बात है। राज दरबार में हमारा मान सम्मान होगा। अतः हमें शीघ्र ही बंधु श्री के विवाह की तैयारियां करना चाहिए।
सेठानी - हे भगवान आप यह कैसा अशुभ समाचार सुना रहे हैं? और वह भी इतनी प्रसन्नता से। हे स्वामी आपको क्या हो गया है ? राजा विधर्मी है उसके साथ मेरी बेटी का विवाह नहीं हो सकता। जिनेंद्र देव,जिनवाणी माँ,वीतरागी दिगंबर गुरु और उनकी भक्ति के बिना रूप, धन,राज पाट सब बेकार है। अरे हाथी के पैर के नीचे दब कर मर जाना

ठीक है परन्तु विधर्मी के साथ कन्या का विवाह करना ठीक नहीं है। हे स्वामी आश्चर्य की बात तो यह है कि आप दिगंबर जैन धर्म के मर्मज्ञ होने पर भी ऐश्वर्य को महत्व दे रहे हैं।ऐश्वर्य होना वह कोई बड़प्पन नहीं है परंतु सत्य दिगंबर जैन धर्म को धारण करने से ही मनुष्य बड़ा माना जाता है। विधर्मी के साथ विवाह करने से संसार में अनंत काल तक परिभ्रमण करना पड़ेगा।

देखिये उस राजा से जाकर कह दीजिये कि वह ऐसी व्यर्थ कल्पनाएं नहीं करें।हम अपनी कन्या का चाहे गरीब से विवाह करा देंगे परंतु विधर्मी राजा से कभी नहीं।

चक्रवर्ती की संपदा इंद्र सरीखे भोग ।
काकवीट सम गिनत हैं सम्यक दृष्टि लोग।।

सेठ जी- हे देवी मैं तो मात्र तुम्हारी परीक्षा ले रहा था मैं भी विधर्मी के साथ बन्धु श्री का विवाह नहीं करना चाहता। मुझे आपके विचार जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई।अब हमें बंधु श्री की भी परीक्षा कर लेनी चाहिए।
सेठानी- मैं तो डर ही गई थी। हां हां मैं उसे अभी बुलाती हूं।

पंचम दृश्य

सेठानी- बेटी बंधु श्री ओ बेटी बंधु श्री।
बंधु श्री-जी माता जी पिता जी प्रणाम आपने याद किया?
सेठ जी - बेटी तुम बहुत भाग्यशाली हो तुम्हारे लिए यहां के राजा का रिश्ता आया है। बेटी तुम पुण्यवान हो विवाह के बाद तुम देश की पटरानी बनोगी हमारे भी भाग्य खुल जाएंगे। सारा देश हमारा भी सम्मान करेगा। हम तो बहुत सौभाग्यशाली हैं जो तुम्हारे जैसी बेटी हमे प्राप्त हुई।
बंधु श्री - पिताजी क्षमा करना आज आपको यह क्या हो गया है? क्या कहा आपने भाग खुल गए नहीं पिताजी भाग फूट गए हैं। आपको ऐसी बातें शोभा नहीं देती आपने ही तो संस्कार दिए हैं कि प्राण जाए पर जैन धर्म नहीं छोड़ना। क्षमा कीजिए पिताजी संसार में हर माता-पिता अपनी संतान को सुख में देखना चाहते है और आप कैसे माता-पिता। हैं जो अपनी स्वयं की बेटी को ही उस विधर्मी राजा से विवाह करके उसका धर्म नष्ट करना चाहते हैं। इस दिगंबर जैन धर्म के सामने स्वर्ग का साम्राज्य भी धूल के समान है। हमारे इस महान जैन धर्म के में रानी चेलना, रानी रेवती, सती सीता, सती नीली, अनंगसरा, अंजला जैसी महान नारियां हुई है जिन्होंने भयंकर कष्टों में भी जैन धर्म नहीं छोड़ा और मुझे तो महान आश्चर्य हो रहा है कि आप मेरे पिता होकर भी मेरा अनिष्ट करना को तैयार है इससे तो अच्छा है कि आप मुझे कुएं में डाल दें।

शादी की बात जब आई बोली सभी से नम्र होकर ।
कैसे करूं विवाह बताओ संयम शील धर्म खोकर।
उपसर्ग बन पहाड़ भी जो मुझसे टकराएंगे।
प्रभु के आशीष से सब चूर चूर हो जाएंगे ।

सेठ जी- बेटी श्रद्धा तुम जैन धर्म की रखना और राजा की अपार संपति को भोगना।
बन्धु श्री- धर्म को कोड़ी के मोल में बेचना यह बुद्धिमानी नहीं है । पिताजी मैं इन पुद्गल के ढेरों के सामने अपने चैतन्य हीरे को गवा दूं? नहीं पिताजी नहीं मैं प्राण दे दूंगी परंतु जैन धर्म का साथ कभी नहीं छोड़ूंगी। क्योंकि दिगंबर जैन धर्म को धारण करने से ही मोक्ष लक्ष्मी प्राप्त होती है और इस मोक्ष लक्ष्मी के समक्ष उस राज वैभव का कोई मोल नहीं है।
नहीं चाहती जैन धर्म के बिना चक्रवर्ती होना ।
नहीं अखरता जैन धर्म से सहित दरिद्री भी होना ।।
सेठ जी- हे पुत्री! तू धन्य है आज मेरा जीवन सफल हुआ । तुम जैसी पुत्री पाकर मैं बहुत गौरव का अनुभव कर

रहा हूं। बेटी यह तो मात्र तुम्हारी परीक्षा ही थी इसमें तुम पूर्णरूपेण सफल हुई हो । हमे तुम पर गर्व है । बेटी जब तक मैं जीवित हूं तब तक तेरा विवाह विधर्मी के साथ कभी नहीं होने दूंगा।

सेठानी - लेकिन यदि हम इस रिश्ते को ठुकरायेंगे तो राजा बलपूर्वक बंधु श्री के साथ विवाह कर लेगा और राजाज्ञा उल्लंघन का दण्ड भी देना पड़ेगा। अतः हमें यह नगर छोड़कर चले जाना चाहिए।

सेठ जी - हां हमें यह नगर आज ही छोड़ना होगा लेकिन इस अरबों की संपत्ति का क्या करूं?

बंधु श्री- पिताजी धर्म धन के आगे पुद्गल धन की क्या मिसाल? यदि राजा हमें मृत्यु दंड दे देगा तो हम इस संपदा का क्या करेंगे इसका मोह त्यागो और आज ही इस राज्य को छोड़कर कहीं और जाकर धर्म साधना करेंगे। (सेठ जी का परिवार एक अरब आठ करोड़ की संपत्ति लेकर नगर छोड़कर चला जाता है और राजा को इस बात की जानकारी मिलती है)

वापस पहले वाला दृश्य आता है।

(प्रजाजन दरबार में आते हैं)

प्रजा- महाराज की जय हो,महाराज की जय हो।

राजा- कहिए प्रजाजन क्या समस्या लेकर उपस्थित हुए हो?

प्रजा- महाराज आपके राज्य में अनहोनी हुई महाराज अनहोनी।

प्रजा- आपके राज्य में सुख पूर्वक निवास करने वाला परिवार पलायन कर गया। महाराज यह तो अनर्थ हुआ महाराज यह तो अनर्थ हुआ ।

राजा- साफ-साफ बताइए क्या घटना घटी है ?

महाराज- हमें आप पर पूर्ण विश्वास है। परंतु कुछ लोगों का कहना है कि आप के भय के कारण सेठ धनपाल ने अपनी अरबों की संपत्ति त्याग दी। और परिवार सहित यह राज्य छोड़ कर चल दिए। महाराज वह परिवार तो एक सज्जन परिवार था। वह परिवार निश्छलता और संस्कारो का परिचायक था। जैन धर्म पर उन्हें अटूट श्रद्धान था। उनका परिवार सारी संपत्ति को धूल में मिला धर्म को साथ लेकर चल दिया। उनके साथ यह अन्याय ? यह सही नहीं हुआ राजन। महाराज आपके राज्य में तो प्रजा सुखी होना चाहिए वह परिवार अब दर-दर भटक रहा है।उनका क्या ठिकाना होगा? महाराज दया कीजिए।कृपया कर उन्हें रोक लीजिए। अब हमारी बेटियों की सुरक्षा कौन करेगा? उस निश्चल परिवार का क्या दोष था? महाराज न्याय कीजिए।

राजा- अरे मैंने यह कितना बड़ा अपराध कर दिया। एक निश्छल परिवार छिन्न-भिन्न कर दिया ।उस कन्या का क्या दोष था? मेरे से बहुत बड़ी गलती हो गई। वाह! जैन धर्म इतना पवित्र है जिसकी महिमा के कारण सेठ जी के परिवार ने अपनी अरबों की संपत्ति को दाव पर लगा दिया। मैं अपनी भूल के कारण जैन धर्म का विरोध करता रहा। अहो! वास्तव में दिगंबर जैन धर्म ही जीवो का कल्याण करने वाला है इसलिए आज से मैं भी जैन धर्म अंगीकार करता हूं ।

सर्वज्ञ शासन ,दिगंबर मुनिराज ,दिगंबर जैन धर्म ,

जयवंत हो, जयवंत हो, जयवंत हो इस तरह जैनधर्म पर श्रद्धा रखने वाली बन्धु श्री के परिवार ने संपदा छोड़ना तो सुखद समझा परंतु जैन धर्म से एक पल भी दूर होना उन्हें ना भाया ।उनके इस सिद्धांत की अडिकता को देखकर राजा ने भी धर्म परिवर्तन कर जिन धर्म को अंगीकार किया ।इस तरह यह कहानी यहीं पूर्ण होती है

विभूति -नहीं मैं कुछ कहना चाहती हूं यह कहानी तो पूर्ण हुई परंतु हमारी कहानी तब तक अधूरी है जब तक हम जिन शासन का महत्व अपने हृदय में नहीं उतार लेते ।

इस कहानी से मुझे जैन धर्म की महिमा समझ में आई है कि हमारा जैन धर्म कितना महान है। जो भी जैनधर्म से विमुख होकर अन्य धर्म में विवाह करता है वह गृहीत मिथ्यात्व का पोषण करके भव भव में रुलता है तथा महा कष्ट पाता है । पूर्व में भी ऐसे महान पुरुष तथा महान सतियां हुई हैं। जिन्होंने जैन धर्म के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर किया है ।पटरानी का पद मिलने पर भी बंधु श्री को जैन धर्म छोड़ना इष्ट नहीं लगा और वह जैन धर्म के

लिए पटरानी पद के साथ-साथ अपनी सारी संपत्ति और नगर तक छोड़ कर चली गई ।और एक मैं हूं जो अल्प समय के इन लौकिक सुखों के लिए और अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए जैन धर्म जैसे महान धर्म को छोड़ने के लिए तैयार हो गई। धिक्कार है मुझे । इस महान जैन शासन को छोड़ने का विचार भी मेरे मन में कैसे आया? अपने इस अपराध के लिए मैं देव गुरु धर्म से क्षमा मांग कर उनकी आराधना करूंगी। पिताजी मुझे क्षमा कीजिए मैं प्रतिज्ञा करती हूं कि मैं आपकी व जैन शासन की आज्ञा में ही विवाह करूंगी।

सूत्रधार 2 - धन्य धन्य है बंधु श्री और धन्य धन्य है मात पिता।
राजपाट वैभव ठुकराया जिनशासन ही श्रेष्ठ लगा।
जिन शासन की रक्षा हेतु जड़ वैभव सब त्याग दिया।
राजा को भी महिमा आई जिनशासन फिर ग्रहण किया।
सुनो भव्य जन पुत्री बहना जैन धर्म सम्मान करो।
दुर्लभ उत्तम कुल पाया है आत्म धर्म स्वीकार करो।
दुख भव का अंत करें सब प्राणी बात सुनो भगवान की।
धन्य धन्य वे महासती हैं जय जय सत श्रद्धान की।